Roll No. .....
Signature of Invigilator .....

**Paper Code**
**MD-101**

# पतंजलि विश्वविद्यालय

# University of Patanjali

**Examination Jan. – Feb. – 2022**

**M.A. Darshan, Semester : First**
**दर्शन : प्रश्न-पत्र : प्रथम**
**वैदिक साहित्य एवं सांख्य-योग - प्रथम**

**Time: 3 Hours** **Max. Marks: 70**

---

**नोट :** यह प्रश्नपत्र सत्तर (70) अंकों का है जो दो (02) खंडों क, तथा ख में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है।

## खण्ड-क
## (दीर्घ-उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड 'क' में पांच (05) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिए हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए पंद्रह अंक निर्धारित हैं। किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **(3×15=45)**

1. योगदर्शन तथा व्यासभाष्यानुसार ईश्वर के स्वरूप अवधारणा का स्पष्ट करें।
2. व्यासभाष्यानुसार सप्रज्ञात और असप्रज्ञात समाधि के स्वरूप लक्षण तथा प्रकार भेद का सप्रमाण उल्लेख करें।
3. वेदों में वर्णित सृष्टि रचना के सन्दर्भों में कारण सिद्धान्त की समीक्षात्मक व्याख्या कीजिए।
4. सांख्य के कारणता सिद्धान्त के निरूपण या सत्कार्यवाद की आलोचनात्मक समीक्षा कीजिए।
5. महर्षि कपिल के अनुसार पुरूषबहुत्व का निरूपण और अद्वैत सिद्धान्त का यथार्थ स्वरूप की व्याख्या करें।

## खण्ड-ख
## (लघु-उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ख' में सात (07) लघु उत्तरीय प्रश्न दिए गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए पांच अंक निर्धारित हैं। किन्हीं **पांच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **(5×5=25)**

6. योगदर्शन तथा व्यासभाष्य के अनुसार वैराग्य के स्वरूप का विवेचन संक्षेप में करें।
7. चित्तभूमियों की व्याख्या योगदर्शन के व्यासभाष्यानुसार प्रस्तुत करें।
8. महर्षिपतञ्जलि तथा महर्षि-व्यास द्वारा प्रदत्त अभ्यास के स्वरूप तथा उसके दृढभूमि की उपाय व्यवस्था का वर्णन करें।
9. योग के विघ्न-उपविघ्न-विषयक व्याख्या संक्षेप में प्रदान करें।
10. वेदों में एकेश्वरवाद की अवधारणा का प्रमाणपूर्वक प्रतिपादन करें।
11. योगदर्शन के भाष्यानुसार प्रत्यक्ष अनुमान और आगम का स्वरूप निरूपण करते हुये व्याख्या करें।
12. वेद की पौरूषेयता, अपौरूषेयता का निर्णयात्मक समाधान करें।

----------X----------